दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक : 25.07.2026

प्रकाशनार्थ

आज दिनांक 25.07.2026 को **'कारगिल विजय दिवस'** की पूर्व संध्या पर दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोरखपुर के **'रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग'** एवं **'संस्थागत नवाचार प्रकोष्ठ'** द्वारा विशिष्ट व्याख्यान तथा प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो. प्रदीप कुमार यादव, पूर्व विभागाध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दीन दयाल उपाध्याय, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर ने कहा कि कारगिल के कठिन वातावरण में भारतीय सैनिकों ने विजय प्राप्त करके अद्म्य साहस, वीरता तथा शौर्य का परिचय दिया। पाकिस्तान द्वारा संचालित कारगिल संघर्ष पाकिस्तान की कुण्ठा तथा निराशा का परिणाम रहा। पूर्व के प्रत्यक्ष युद्धों में उसे सफलता प्राप्त नहीं हो पायी थी, इसलिए उसने कारगिल में छद्म युद्ध और घुसपैठ का सहारा लिया। जबकि भारत ने सौहार्द पूर्ण माहौल बनाने के लिए **'लाहौर बस यात्रा'** का आयोजन तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी ने किया था। 1999 में भारत को जब शीत ऋतु में खाली किए गये बंकरों में घुसपैठ की सूचना मिली तब तक बहुत देर हो चुकी थी। इन बंकरों का सामरिक लाभ प्राप्त करते हुए पाकिस्तानी सैनिकों ने महत्वपूर्ण स्थानों पर अपना अधिकार जमा लिया था। जिसे मुक्त कराना भारतीय सुरक्षा तथा स्त्रातजी के दृष्टिकोण बहुत आवश्यक था। इस संघर्ष में भारत के 527 सैनिक शहीद हुए तथा बहुत से घायल और अपंग हुए, फिर भी भारतीय सैनिकों इस युद्ध में सफलता प्राप्त कर अपनी सैन्य शक्ति को प्रमाणित कर दिया। कैप्टन विक्रम बत्रा, लेफ्टिनेंट मनोज पाण्डेय, रायफल मैन संजय कुमार तथा ग्रेनेडियर योगेन्द्र यादव ने इस संघर्ष में अद्म्य साहस तथा शौर्य का परिचय दिया, जिसके लिए इन्हे परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए **प्राचार्य प्रो. ओम प्रकाश सिंह ने कहा कि** भारत से पाकिस्तान का अलग होने का मुख्य कारण अंग्रेजो की फूट डालने की नीति थी। अलग होने के बाद भारत–पाकिस्तान के मध्य सबसे बड़ी समस्या कश्मीर के विलय की बनी। जिस पर दोनो राष्ट्र अपना दावा करते हैं। जबकि महाराजा हरिसिंह के विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने के बाद कश्मीर का भारत में वैधानिक रूप से विलय हो गया था। फिर भी पाकिस्तान ने कश्मीर में कबालियों की सेना भेज कर संकट की स्थिति उत्पन्न कर दी। जिसका प्रतिउत्तर भारत ने 1948 के कश्मीर युद्ध में दिया था। तब से समय–समय पर पाकिस्तान कश्मीर को अपने अधिकार में लेने हेतु प्रयास करता रहा है। 1999 का कारगिल संघर्ष पाकिस्तान की हताशा का परिणाम था। सीधे युद्ध न करके घुसपैठ के माध्यम से उसने छद्म युद्ध प्रारम्भ कर दिया। जिसका प्रतिकार भारतीय सेना ने सफलता पूर्वक किया। कारगिल विजय दिवस हमें सैनिकों के प्रति सम्मान तथा आदर का भाव याद दिलाता, क्योंकि विषम भौगोलिक परिस्थितियों के बाद भी भारतीय सेना ने अपने शौर्य, त्याग, बलिदान के माध्यम से भारतीय सीमाओं को सुरक्षित रखने में सफलता प्राप्त की।

इसके साथ ही 'नवाचार प्रदर्शनी 2026' में प्रतिभाग किए गए छात्र–छात्राओं को प्रमाण पत्र भी मुख्य अतिथि तथा प्राचार्य द्वारा वितरित किया गया। कार्यक्रम का संचालन रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग के सहायक आचार्य डॉ. शुभ्रांशु शेखर सिंह ने किया। उक्त अवसर पर महाविद्यालय के शिक्षक डॉ. इन्द्रेश पाण्डेय, डॉ. जितेन्द्र पाण्डेय, डॉ. निधि राय, डॉ. त्रिभुवन मिश्र, डॉ. राकेश सिंह, डॉ. अनुपमा मिश्रा, डॉ. अभय मालवीय, डॉ. नितीश शुक्ला, डॉ. सुभाष गुप्ता, डॉ. रानी द्विवेदी सहित विभागीय शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

डॉ.(शैलेश कुमार सिंह)
प्रभारी, सूचना एवं जनसम्पर्क